B.A Ist yr.
Uma Pathak
Skt. Deptt.

958. राजाऽहः सखिभ्यष्टच् - 5।4।91

यह विधिसूत्र है। यह 'समासान्ताः' के अधिकार क्षेत्र में आता है। सूत्र का अर्थ है यदि तत्पुरुष समास के अन्त में 'राजन्, अहन्' और 'सखि' शब्द रहे तो उस समास के अन्त में 'टच्' (अ) प्रत्यय होता है। यथा — परमराजः — लौ० वि० - परमश्चासौ राजा च, अ० वि० - परम + सु, राजन् + सु। 'विशेषणं विशेष्येण बहुलम्' सूत्रानुसार 'परम' विशेषण के साथ 'राजन्' (विशेष्य) शब्द का समास हुआ। 'कृत्त....' से प्राति० संज्ञा, 'सुपो धातु..' से विभक्ति का लोप। परम + राजन् + टच् (अ) समानाधिकरण अर्थ होने के कारण — 'नलोपो प्रातिपदिकान्तस्य' से राजन् न् का लोप होकर परम + राज + अ = परमराज, स्वादि कार्य होकर परमराजः रूप सिद्ध हुआ।

959. आन्महतः समानाधिकरणजातीययोः - 6।3।46

यह विधिसूत्र है। यहाँ अधिकार सूत्र 'अलुगुत्तरपदे' से उत्तरपद की अनुवृत्ति होती है। सूत्र का अर्थ है - समानाधिकरण अर्थ में महत् शब्द के 'त' को 'आ' आदेश होता है। यथा - महाराजः — लौ० वि० - महान् च असौ राजा च, अ० वि० - महत् + सु + राजन् + सु। 'सन्महत् परमोत्कृष्टाः पूज्यमानैः' सूत्रानुसार 'महत्' पद का राजन् पद के साथ समास हुआ। 'कृत्तद्धित० समासाश्च' से उसकी प्राति० संज्ञा, 'सुपो धातु..' से विभक्ति का लोप, 'आन्महतः समानाधिकरण जातीययोः' सूत्र से 'महत्' के 'त्' को आदेश हुआ — महाराजन बना, 'राजाहः सखिभ्यष्टच्' से टच् होकर महाराजन् + अ, 'नस्तद्धिते' से 'अन्' का लोप होकर — महराज + अ, स्वादि कार्य होकर 'महाराजः' रूप सिद्ध हुआ।

(5) महाजातीयः - लौ० वि० - महांश्चासौ जातीयश्च, अ० वि० - महत् + सु जातीय + सु। Same as महाराजः।

960 — द्व्यष्टनः संख्यायामबहुव्रीह्यशीत्योः — 6|3|47
यह विधि सूत्र है। सूत्र का अर्थ है संख्यावाची 'द्वि' और 'अष्टन्' शब्द के 'आकार' का अन्तादेश होता है यदि 'अशीति' शब्द परे नहीं होता। 'अलोऽन्त्यस्य' परिभाषा के अनुसार यह आकारादेश 'द्वि' के इकार के स्थान पर और 'अष्टन्' के अन्तिम 'नकार' के स्थान में ही होता है।

यथा — द्वादश — लौ० वि० — द्वौ च दश च, अ० वि० — द्वि औ, दशन् + जस्।

'चार्थे द्वन्द्वः' सूत्रानुसार संख्यावाची 'द्वि' शब्द का 'दशन्' पद के साथ समास हुआ। 'कृत्तद्धित...' से प्राति० संज्ञा, 'सुपो धातु..' से विभक्ति का लोप — द्वि + दशन्।
'द्व्यष्टनः संख्यायाम्..' सूत्रानुसार 'द्वि' के इकार का 'आकार' आदेश होकर 'द्वादशन्' रूप हुआ। स्वादि कार्य होकर 'जस्' प्रत्यय लगाकर 'द्वादश' रूप सिद्ध हुआ।

(b) अष्टाविंशति — लौ० वि० — अष्टौ च विंशति च, अ० वि० — अष्टन् + जस् + विंशति जस्। Same as द्वादश।

961. परवल्लिंगं द्वन्द्वतत्पुरुषयोः — 2|4|26
यह अतिदेश या नियम सूत्र है। इसका अर्थ है द्वन्द्व तथा तत्पुरुष समास में उत्तरपद जिस लिंग का होता है, वही लिंग पूरे पद का होता है।

यथा — कुक्कुटश्च मयूरी (मयूर्यौ) मयूरीकुक्कुटौ।

वा० — द्विगुप्राप्तापन्नालंपूर्वगतिसमासेषु प्रतिषेधो वाच्यः — यह निषेध के लिए वार्तिक है। द्विगु समास में, प्राप्त, आपन्न, अलं पूर्वक समास तथा गतिपूर्वक समास में उत्तर पद के समान लिंग नहीं होता है।

यथा — पञ्चकपालः — पञ्चसु कपालेषु संस्कृतः पुरोडाशः इस विग्रह में पुं० का रूप बना है।

रूपसिद्धि Contd.